चिमूर (महाराष्ट्र) – एक अनुभव

- संजीव कीर्तने (21/11/2023)

चिमूर इलाका

1. घने जंगल, पहाड़, झीलें और विविध प्रकार की वनस्पती के बीच रहने के आदी लोग। इसी में अन्य जंगली जानवरों के साथ जब शेर भी बहुतायत से होते हैं तो इनके बीच बरसों से रहनेवालों की विद्या का प्रकार भी बड़ा दिलचस्प होना स्वाभाविक है। विशेषकर शेरों के बीच सामान्य जीवन बिताने के इनके किस्से बहुत अनमोल हैं।
2. चिमूर क्रांति का विवरण आप इंटरनेट पर देख सकते हैं। इस क्रांति का प्रभाव सामान्य जन के व्यवहार में दिखता है।
3. गाडगे महाराज, तुकडोजी महाराज का असर छोटे छोटे गांवों के लोगों पर है। आजादी की लड़ाई में इनकी भूमिका, गांधी, विनोबा, बाबा आमटे जैसे संतों के नजदीक चिमूर रहा है। संत परंपरा जीवित है।
4. कोयले का भण्डार है। आधुनिक समाज ने शेरों के लिए ताडोबा जैसे रिजर्व फारेस्ट बना डाले और कोयले के लिए बड़े-बड़े थर्मल पावर प्लांट खड़े कर दिए हैं। पोल्यूशन के साथ सभी बुराईयों ने पूरे इलाके को अपनी चपेट में ले लिया है।
5. इस भूमिका के बीच आज भी लोकविद्या समाज का ज्ञान अपनी खूबियों के साथ, सतत संघर्ष के साथ, धाराप्रवाह में बहते दिखाई देता है। यह महसूस करने के लिए ही सर्वे यानि लोगों के जिंदगी गुजारने की जरुरत है।उनके साथ घटनाओं की शृंखला जब होती है तभी असल बातें खुलती देखी जा सकती है।

चिमूर हाट

1. चिमूर हाट एक ऐसा स्थान है जहां सभी प्रकार के लोकविद्या समाज के लोग एकसाथ दिखाई देते हैं।पूरे दिनभर रहते हैं और निरंतर कुछ न कुछ सक्रिय व्यवहार में रहते हैं। इस स्थान पर उनसे मेल मिलाप, संवाद, व्यवहार सहज भाव से संभव है और उनके साथ निरंतरता में किन्हीं घटनाओं को गढ़ने में आसानी है। मैं कई लोगों से दोस्ती बना पाया और घटनाओं को अंजाम दे सका। जैसे एक किसान हल्दी उगाता है, रिफाईन करता है, बेचता है, एक्सपोर्ट करता है। उसके खेत में जाने पर अनेक बातें खुलती गई और कई नए दोस्त बनने लगे। किसान की फिर भी गरीबी देख मैं कई बातों पर संवाद कर पाया और लोकविद्या जन आंदोलन के मुद्दे लोगों के बीच रखनें में मज़ा आने लगा। ऐसे ही लुहार, सुतार, दर्जी और अनेक लोगों के साथ अलग अलग मुद्दे पर बातें होने लगी।
2. विद्या आश्रम से प्रकाशित प्रत्येक साहित्य की सार्थकता मुझे महसूस होने लगी। ज्ञान-पुंज की लोकविद्या-इकाई की बात यहाँ मैंने परखने की कोशिश की और मुझे सच में गांवों के समूहों के बीच के व्यवहार में एक अदभुत ज्ञान-पुंज का एहसास होने लगा।

समझ का आधार

उपरोक्त वातावरण की समझ बनाने में अनेक दिलचस्प घटनाएं होती रहीं। मोटे तौर पर सामाजिक विचार ऐसे बना:

1. जंगल - कण कण,घट घट में एक ही सत्ता।
2. कोयला -- लोकहितकारी यानि नैतिकता।
3. शेर --केन्द्रिय सत्ता के स्थान पर वितरित सत्ता।
4. संत --परपीडा का ज्ञान।
5. आजादी के दीवाने --त्याग, प्रेम, स्वायत्त अस्तित्व के विवेक से कर्ता की भूमिका में आना।
6. हाट -- लोक संगठन, लोक संचालन, सतत् पुनर्निर्माण, न्यायपूर्ण -खुशहाल -स्वस्थ समाज।

वास्तव में लोकविद्या दर्शन के अनेक आयाम जीवंत रुप में देखने का स्थान यह ज्ञान-पुंज है। इन आयामों के अलग-अलग काम्बिनेशन हाट में महसूस होते हैं। किसी अध्ययन को कैसे करते हैं यह ज्ञान मेरे पास नहीं होने से मैं बिखरे बिखरे तरीके से अपनी बातें रख रहा हूं।

हाट की समझ

1. बौद्धिक सत्याग्रह, यानि मनुष्य और समाज को नैतिक पथ पर ले जाना।
2. जन मानस में ऐसे विचार और कार्य आकार लें जिनमें सत्य के दर्शन होते हैं।
3. हर मनुष्य ज्ञानी है और नैतिक सत्ता का स्वामी है।
4. हर मनुष्य इस स्वायत्त शक्ति से भरपूर हो तो एक सक्रिय समाज के निर्माण की बुनियाद बनेगी।
5. हाट वितरित सत्ता या स्वराज के विचार का स्थान है।
6. एक छोटी भौगोलिक इकाई में रोटी कपड़ा मकान की पूर्ति स्थानीय जन-ज्ञान-खपत को सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ पूरा करे।
7. विभिन्न ज्ञान-धाराओं का मिलन।
8. व्यवस्था और कार्य की अनेक इकाईयां।
9. इकाईयों में आपसी मेल के विविध मार्ग बन रहे।
10. मनुष्य की सामाजिक गतिविधियों को निरंतर सक्रिय बनाए रखना।
11. केन्द्रीय शासन और बडी पूंजी की दखल मर्यादित करना।
12. लोकविद्या घड़ी के सभी रास्ते यहाँ मिलते नजर आते हैं।

शायद ऐसे अनगिनत तरीकों से हम इन हाटों को देख सकते हैं। चिमूर के आसपास के लगभग १०० मील के क्षैत्र में नियमित हाट बाजार लगते हैं जिनका आपस में दिलचस्प रिश्ता है।

लोग अनेक तरीकों से इस रिश्तों को निभाते नजर आते हैं। यानि यह केवल व्यापार नहीं पर कहीं ज्यादा गहरी बातों को जिंदा रखने का अदभुत तरीका है जो स्वनिर्मित होते रहता है। जब इसे हम समझते हैं तो नए विचारों की बाढ सी आ जाती है। और क्या लिखूं और क्या नहीं। आप ही लोकविद्या की नजर से इन्हें ठीक से पिरो सकते हैं।

किसी भी अंचल की एक छोटी सी इकाई ज्ञान-पुंज ही होती है। ऐसी छोटी-छोटी लोक-इकाइयां अराजनीतिक समाज का विचार, यानी वितरित सत्ता का विचार, यानी स्वराज का विचार, नए सिरे से गढ़ सकती है ।

चिमूर लोक-इकाई अपने अंचल की हजारों लोक इकाइयों को यही संदेश दे रही है। चिमूर हाट बाजार को केंद्र में रखकर 12 दिशाओं के 12 मील के अंचल के कोई 12 गांवों के लोग मिलकर, यह नई वितरित सत्ता की बात पूरी दुनिया के सामने रख सकते हैं, रख रहे हैं।

चिमूर लोक-इकाई के पास क्या है? जंगल है, कोयला है, शेर है, संतों के विचार हैं, आजादी के दीवानों के विचार हैं, और बेश कीमती वितरित सत्ता का नया विचार गढ़ने का लोक जीवन का जीवंत स्थान है; यानी प्रत्येक शुक्रवार को अपने बल पर सतत चलने वाला चिमुर हाट बाजार है।

चिमूर लोक-इकाई का सामाजिक विचार

जंगल, कोयला, शेर, संत, स्वराज (चिमूर क्रांति) है। हाट बाजार की श्रंखला इस अंचल के सामाजिक विचार को गढते हैं। संगठित ज्ञान, संगठित धन, संगठित विचारधाराएं, संगठित धर्म-संप्रदाय, संगठित कंप्यूटर का ज्ञान, संगठित साइंस का ज्ञान आदि के प्रभाव से बाहर आ कर सोचने का आग्रह है ।

लोकहितकारी सक्रियता में निरंतरता कैसे आती है यह चिमूर हाट में रमनें पर महसूस होता है। जड़-जीव में, कण-कण में, घट-घट में एक ही सत्ता होती है यह भी चिमूर के जंगलों का यहाँ के लोगों से रिश्ता बयां करता है। जब एक ही सत्ता जर्रे-जर्रे में वितरित है तो क्यों किसी की गुलामी करें? चिमूर क्रांति, त्याग, प्रेम और स्वायत्त अस्तित्व का जीता जागता उदाहरण है।

चिमूर लोक इकाई अपने ज्ञान के आधार पर कर्ता की भूमिका में आकर कुछ पुनर्निर्माण की बात भी कर रही है। चिमूर लोक इकाई का कोयला भी लोकहित कार्य में लगाया जा सकता है। यह कोयला यहाँ के लोगों की खुशहाली ला सकता है। न्यायपूर्ण दृष्टि का यह आग्रह है कि चिमूर लोक-इकाई एक स्वस्थ समाज के संचालन और संगठन में कर्ता की भूमिका में तभी आएगी जब उसके पास के संसाधनों का उपयोग कोई बाहरी केंद्रीय सत्ता जबरन ना करे।

चिमूर लोक-इकाई के पास संतों का दर्शन है यानी परपीड़ा का ज्ञान है। इसी ज्ञान के बल पर सत्ता को घर-घर पहुंचाया जाता है। चिमूर लोक-इकाई के पास शेरों को पालने के बजाय शेरों के साथ सहजीवन का ज्ञान है। जड़-जीव के साथ यहाँ का मनुष्य अपने ज्ञान, अनुभव, स्वभाव और कर्तव्यों को हमेशा नया आकार देता आ रहा है, जिससे लोकहितकारी सक्रियता के नए रास्ते खुलते रहते हैं। सहजीवन का यह ज्ञान अन्य लोक इकाइयों को आपस में पिरोता है।

सबसे जीवंत स्थान शुक्रवार का हाट यानी चिमूर हाट बाजार है। समाज में ऐसा कोई स्थान, संगठन, धर्म-संप्रदाय, ज्ञान, विचार नहीं बचा है जिसमें सामान्य से सामान्य लोग अपने ज्ञान के साथ स्वप्रेरित होकर कर्ता की भूमिका में एक साथ नियमित समय, सतत मिलते आ रहे हैं। हाट बाजार मानव की सक्रियता की अमूल्य रचना है। अद्वितीय है। चिमूर हाट बाजार को नैतिकता के मापदंडों पर परखने से पता लगेगा कि यह लोक का जीवंत स्थान, लोक की मुक्ति का रास्ता गढने का जीवंत, जिंदा स्थान है। हाट बाजार केवल खरीदने बेचने का स्थान नहीं है , ना ही यह माल की आधुनिक सभ्यता से जुड़ा है। यह बाजार, लोगों की संवेदनाओं के साथ जुड़ा, हजारों संभावनाओं से भरा हुआ, नैतिकता से ओतप्रोत मानव द्वारा मानव की मुक्ति की बात करने का अदभुत स्थान है।

लक्ष्मण एक किसान हैं जो सब्जी और अन्य फसलों के साथ हल्दी की खेती करते हैं। अकेले चिमूर हाट में

आते हैं। अपने ज्ञान के बल पर उत्पादित फ़सल को यहां लोगों को देते हैं। ऐसे ही तेजस शिंदे लोहे के औजार

बनाते हैं। पंकज कामडी खेती के साथ पशुपालन करते हैं।

ये हैं दिगम्बर और उसके साथी जो मछली पालन और शहद निकालते हैं। इनके साथ जंगलों में ऊंचे ऊंचे पेड़ों से शहद निकालने का तरीका हमने देखा। बहुत अदभूत है।

ये हैं रमेश कामडी जिन्होंने जंगल ले जाकर बताया कि कैसे उनका सामना बाघों से होता है।

मंगलवार, 21 नवम्बर 2023 चर्चा के लिए

1. एक ज्ञान-पुंज लोक इकाई का अनुभव।
2. पूरे देश में कई जगहों पर ऐसा अनुभव आया है।
    a. मालवा के गांव (पालड़ी) ।
    b. पीथमपूर औद्योगिक परिसर (चायडीपुरा)।
    c. मालवा-निमाड़ के अंचल (खुर्दी)।
    d. झाबुआ - अलीराजपुर के आदिवासी अंचल (वालपूर) अन्य अनेक स्थान है।
3. लोगों के बीच मुख्य विचार के इर्द-गिर्द अनेक प्रकार के कार्यों को खोलने से कई प्रकार की घटनाएं घटती है। इन्हीं घटनाओं से लोग गहराई से मुद्दे समझने लगते है। घटनाएं बरसों तक अपनी छाप छोड़ जाती है और कालांतर में इस छाप को पुनर्जीवित किया जा सकता है। लोकविद्या जन आंदोलन की अनेक घटनाएं लोगों के स्मरण में हैं। इसमें नए विचारों को जोड़ने के लिए निरंतरता में घटनाएं घटित होती रहनी चाहिए।
4. किसी ज्ञान-पुंज लोक इकाई का वर्तमान स्वरूप बहुत प्रेरणादाई है। इसी के आधार पर आंदोलन के मुद्दों पर आधारित कौनसी घटनाओं की श्रृंखला संभव है यह जब महसूस होता है तो रास्ते बनते जाते हैं।
5. लोगों द्वारा ही आंदोलन होगा और उन्हीं को लम्बे समय तक एक दूसरे के साथ पिरोने की चुनौती है।
6. हमने लोकविद्या घड़ी की कल्पना से यह प्रयास किया है। पर नाकाफी है। लेकिन कदम दो कदम जरुर आगे बढे हैं। कुल मिलाकर लोगों को मजा आने लगा। और इसी बल पर शायद आंदोलन जिंदा रहता है।